लेखक परिचय

डॉ. सक्सेना बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। सफल कार्पोरेट प्रोफेशनल, नेचुरोपैथ, वेलनेस काउंसलर, क्लींजिंग थेरेपिस्ट, पास्ट लाइफ रिग्रेशन थेरेपिस्ट, रेकी मास्टर, मैजीशियन, एक्टिविस्ट, थिंकर, कवि, कलाकार, लेखक-निर्देशक, प्रोड्यूसर, पेंटर...! वे मानवता की सेवा के प्रति कटिबद्ध हैं। डॉ. पीयूष सक्सेना का जन्म 1958 में हुआ था। उनके पिता जस्टिस (रिटायर्ड) कृष्ण नारायण इलाहाबाद हाईकोर्ट से सेवानिवृत्त जज हैं। माता (स्वर्गीय) शांता एक गृहिणी थीं।

डॉ. पीयूष सक्सेना अपने माता-पिता के साथ

उनकी पत्नी शुभा कोलाबा, मुंबई स्थित एक प्रतिष्ठित स्कूल की प्रिन्सिपल हैं; पुत्र प्रखर ने अमेरिका से सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है और अब अमेरिकी नागरिक हैं। पुत्री प्रियांशी आर्ट और पेंटिंग के व्यवसाय में हैं।

डॉ. सक्सेना ने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से बी.एससी. (फिजिक्स) और मॉडर्न हिस्ट्री से एम.ए. किया है। उन्होंने अमेरिका से नेचुरोपैथी में पीएच.डी. की है। डॉ. सक्सेना ने अपने प्रोफेशनल कॅरियर की शुरुआत 1981 में बैंक ऑफ इंडिया से की और 1995 तक उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों में सेवारत रहे। उसके बाद वे रिलायंस इंडस्ट्रीज से जुड़ गए। इन दिनों वे इस कंपनी के नरीमन प्वॉइन्ट, मुंबई स्थित कार्यालय में बतौर सीनियर वाइस प्रेसिडेंट (कार्पोरेट अफेयर्स) कार्यरत हैं।

पिछले 20 सालों से वे प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को जानने-समझने और उससे जुड़े सत्य को लोगों तक पहुंचाने का कार्य पूरी कटिबद्धता के साथ कर रहे हैं।

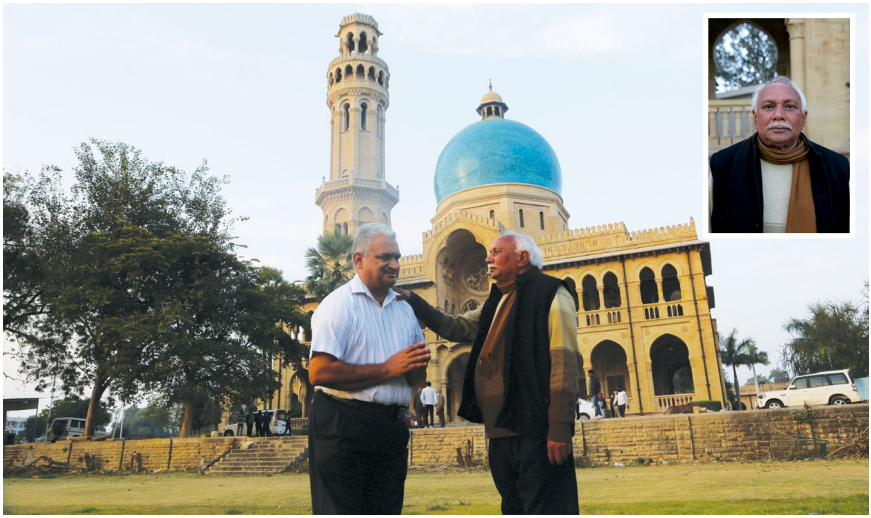

गुरु बिन ज्ञान नहीं... इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में मैथ्स के प्रोफेसर और अपने गुरु डॉ. माता अम्बर तिवारी के साथ

डॉ. सक्सेना अलग-अलग विषयों पर चार पुस्तकों को कलमबद्ध कर चुके हैं। उनके द्वारा लिखी गयी पहली पुस्तक- 'एवरीथिंग मेन नो अबाउट वूमन' (2005), अपनी अनूठी संकल्पना के लिए खूब सराही गयी थी। आज भी यह काफी घरों

अनाथों के लिए मुहिम...24 अनाथ बच्चों के संग महाराष्ट्र के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. विद्यासागर के साथ, राजभवन, मुंबई में आयोजित एक समारोह में

DECCAN HERALD

Bangalore, Monday, February 14, 2005

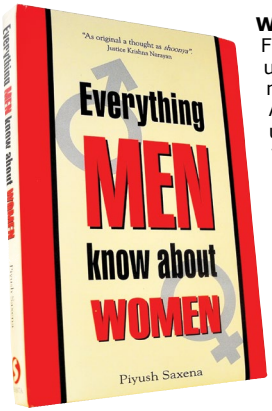

When it comes to women, men draw a blank

For ages the fairer sex has been an enigma to men and unraveling the mystery called "woman" has been a quest that many have, mostly foolhardily, attempted. Or not.

Apparently, working on the premise that the universal male urge to figure out women could lead to a universal male urge to loosen purse strings, Piyush Saxena launched Everything Men Know About Women — a book of pristine white sheets with not a printed word.

Mr Saxena's book, which hit select outlets in the city a week before Valentine's Day and costs Rs 295, has evoked a mixed response from Bangloreans. Some have panned it, calling the "book" a sly businessman's attempt to make a fast buck, whereas others have embraced the publication and loved the unique concept. Many are merely amused by the cheekiness of the enterprising author. Incidentally, Mr Saxena handles corporate affairs at Reliance Industries in Mumbai. Rajan Das, General Manager of Crosswords book store, says his colleagues are closely watching customers who may be potential purchasers so that they can be warned about the "contents or the lack of it".

वह किताब जिसका रिव्यू 'डेक्कन हेराल्ड', बैंगलोर में प्रकाशित हुआ

में कॉफी टेबल बुक के तौर पर शोभा बढ़ा रही है।

'क्योर योरसेल्फ' (2008), डॉ. सक्सेना की दूसरी पुस्तक थी जो उनके द्वारा जन-जन तक पहुंचाई जा रही क्लींजिंग थेरेपी पर आधारित है। 'क्लींजिंग थेरेपी- क्योर योरसेल्फ' (2016), इसी पुस्तक का दूसरा अपग्रेडेड एडिशन है।

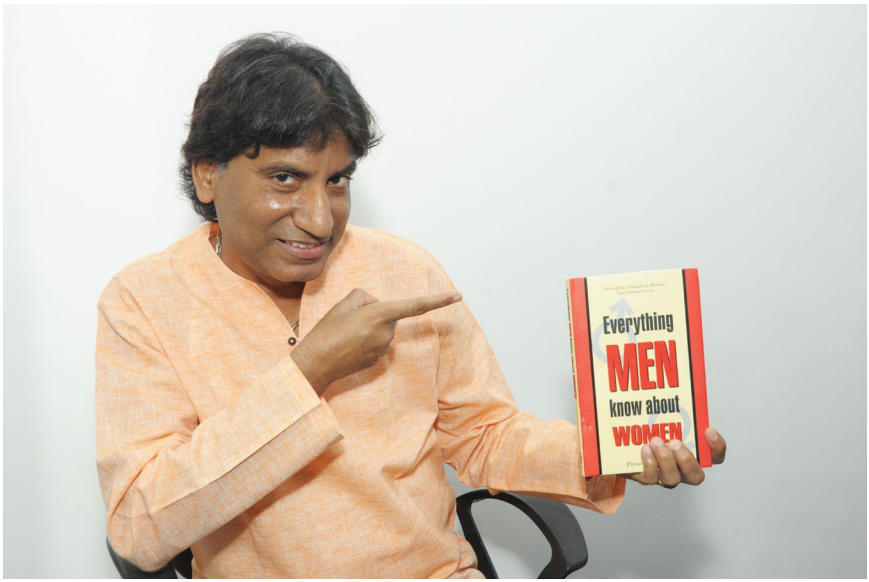

'अरे, पीयूष जी! महिलाओं पर आपने इतना रिसर्च कर डाला... इतनी लेडीज कहां से मिल गईं आपको...?' राजू श्रीवास्तव की परम प्रतिक्रिया देखें, www.menknowwomen.com

टॉक ऑफ द नेशन...'जियो टॉक' शो रिलायंस, मुंबई में क्लींजिंग थेरेपी की प्रस्तुति देते हुए

पहले एडिशन में सिर्फ किडनी, एसिडिटी, लिवर, पैरासाइट और ज्वॉइंट क्लींज से संबंधित जानकारी ही दी गई थी। जबकि दूसरे एडिशन में इन सबके साथ-साथ कोलोन, माउथ, हेयर, थायरॉइड, लंग, PCOS, यूटेरस व फर्टिलिटी, फैलोपियन ट्यूब और वजाइना क्लींज को भी जोड़ दिया गया है। वैसे, डॉ. सक्सेना की क्लींजिंग थेरेपी में शरीर के लगभग सभी अंगों और सिस्टम्स को ध्यान में रखकर कुल 28 क्लींजेज का उल्लेख है।

स्वास्थ्य-कल्याण और सम-सामयिक सामाजिक विषयों पर डॉ. सक्सेना के लेख वक्त-वक्त पर देश की नामी-गिरामी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे

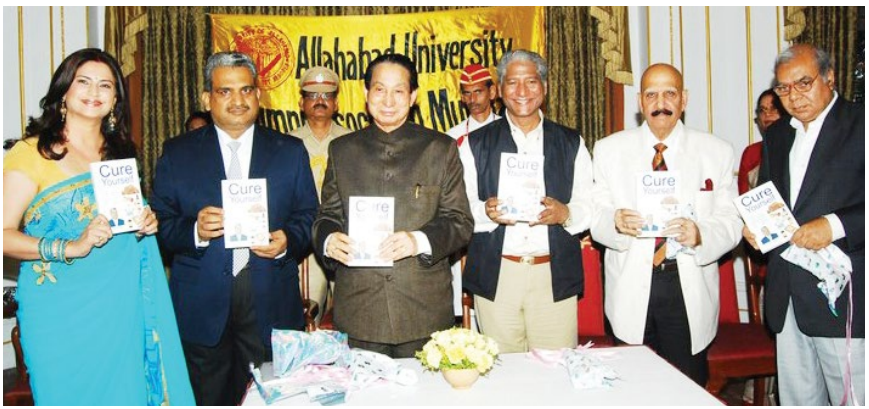

डॉ. सक्सेना महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम डॉ. एस.सी. जमीर (बीच में) के साथ राजभवन, मुंबई में 'क्योर योरसेल्फ' की रिलीज के दौरान। साथ में हैं एक्ट्रेस कुनिका सदानंद, राजेन्द्र गुप्ता, इंडस्ट्रियलिस्ट जकाउल्लाह और वी. के. गुप्ता

भारतीय रिजर्व बैंक के मुंबई स्थित सेन्ट्रल ऑफिस में एक व्याख्यान के दौरान डॉ. सक्सेना

हैं। इनमें हेल्थ और न्युट्रीशन, वूम्मस एरा, दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, नवभारत वगैरह उल्लेखनीय हैं। वे कई स्वास्थ्य आधारित रेडियो वार्ताएं करने के साथ-साथ टीवी प्रोग्राम्स में भी नजर आ चुके हैं। अलावा इसके वे अक्सर देश भर में क्लींजिंग थेरेपी पर निःशुल्क लेक्चर देते रहते हैं और लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने के महती प्रयास में लगे हुए हैं।

डॉ. सक्सेना गैरसरकारी संस्था 'टेम्पल ऑफ हीलिंग' के संस्थापक सचिव (फाउंडर सेक्रेटरी) हैं। क्लींजिंग थेरेपी के प्रचार-प्रसार और लोक-कल्याण के लिए इस नॉन-प्रॉफिट स्वयंसेवी संस्था की शुरुआत की गयी थी। टेम्पल ऑफ हीलिंग को प्रति माह 10,000 USD का गूगल एड ग्रांट अवार्ड प्राप्त है। 'गूगल एड ग्रांट्स' कार्यक्रम के तहत उन रजिस्टर्ड नॉन-प्रॉफिट संस्थाओं को

डॉ. सक्सेना एनएसीईएन, वडोदरा में व्याख्यान देते हुए

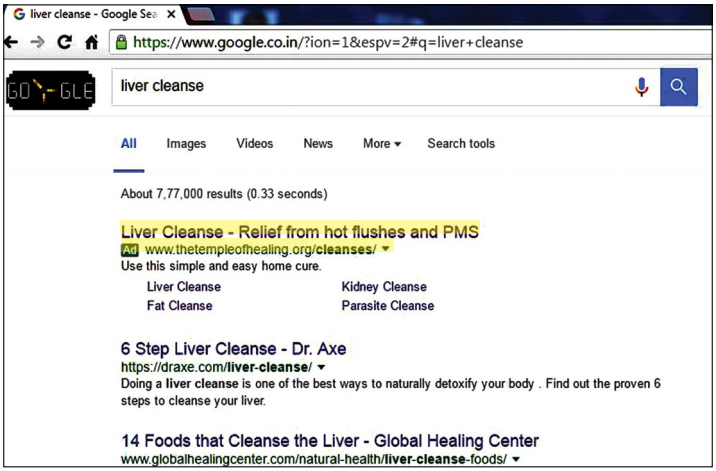

गूगल सर्च का स्क्रीन शॉट; डॉ. सक्सेना की वेबसाइट को प्रमुखता

सहयोग दिया जाता है जो गूगल के समाजसेवा के फलसफे पर खरी उतरती हैं। गूगल साइंस एंड टेक्नोलॉजी, एज्युकेशन, ग्लोबल पब्लिक हेल्थ, एनवायरन्मेंट, युवा विकास और कला के क्षेत्र में काम कर रही संस्थाओं को यह अवार्ड देती है।

डॉ. सक्सेना द्वारा लिखी गयी तीसरी पुस्तक- 'लाइफ ऑफ अ यूनक' (2012) उपेक्षित किन्नर समुदाय की व्यथाओं का बयान करने वाली एक बृहद पुस्तक है। 540 पृष्ठों की यह पुस्तक डॉ. सक्सेना द्वारा सालों तक की गई अनथक रिसर्च का नतीजा है। इस पुस्तक में किन्नर समुदाय के गोपनीय जीवन; मसलन उनके इतिहास, जीवनशैली, कामकाज, त्यौहार-समारोह; गुरुओं की छत्र-छाया में उनकी दुर्दशा, उनकी खरीद-फरोख्त और गुलामी; उनमें व्याप्त वेश्यावृत्ति व दूसरे अपराध; उनके अंतिम संस्कार व दूसरे रस्मों-रिवाज वगैरह पर विस्तार से चर्चा की गयी है। एकैडमिक पक्ष को ध्यान में रखते हुए पुस्तक में जेंडर आइडेन्टिटी, एम्बिगुअस जेनीटिलिया, सेक्स चेंज सर्जरी और कैस्ट्रेशन जैसे गूढ़ विषयों को सरल शब्दों और फोटोग्राफ्स के जरिए समझाने का प्रयास किया गया है।

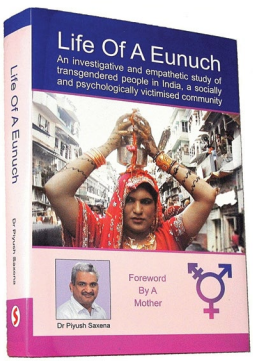

डॉ. सक्सेना ने '...और नेहा नहीं बिक पायी' नामक एक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म का निर्माण व निर्देशन भी किया है। यह फिल्म किन्नर समुदाय में गुरु-चेला परंपरा के नाम पर चल रही 'लेती' की प्रथा, जो कि आम समाज की जानकारी में नहीं थी, का पर्दाफाश करती है। उल्लेखनीय है कि लेती एक तरह से किन्नरों के खरीद-फरोख्त की परंपरा है। उनके

किन्नर समुदाय के सदस्यों के साथ

गुलाम होने का प्रतीक है। इसके साथ ही, फिल्म किन्नरों के रस्मों-रिवाज, परंपराओं वगैरह पर भी रोशनी डालने में कामयाब रही है।

डॉ. सक्सेना ने किन्नरों के कल्याण के लिए भी एक नॉन-प्रॉफिट स्वयंसेवी संस्था 'सॅल्वेशन ऑफ ऑप्रेस्ड यूनक्स' (Salvation of Oppressed Eunuchs; SOOE) की स्थापना की है। यह संस्था किन्नरों को समाज की मुख्य धारा में लाने का प्रयास कर रही है। 'सॅल्वेशन ऑफ आप्रेस्ड यूनक्स' को भी प्रति माह 10,000 USD का गूगल एड ग्रांट अवार्ड प्राप्त है। नतीजतन, गूगल सर्च पर संस्था की वेबसाइट sooe.org.in सबसे ऊपर नजर आती रही है।

डॉ. सक्सेना ने बॉम्बे हाईकोर्ट में इस उपेक्षित समुदाय के हित में एक जनहित याचिका (क्रमांक 01/12) भी दायर की थी। इस याचिका की बदौलत वे किन्नरों के हित में कई बदलाव लाने में कामयाब रहे जो इस प्रकार है-

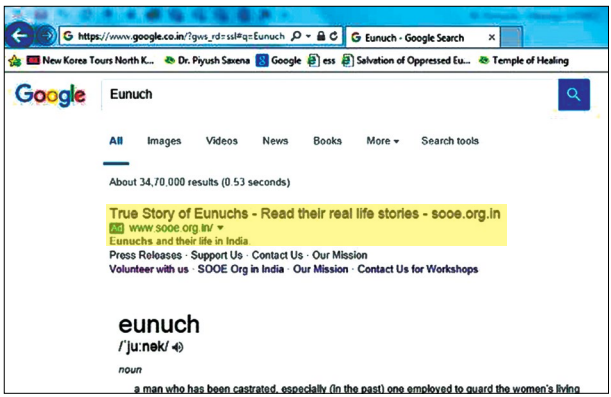

sooe.org.in को भी गूगल सर्च पर प्राथमिकता

पार्लियामेन्ट्री स्टैंडिंग कमेटी के समक्ष प्रेजेन्टेशन देते डॉ. सक्सेना

- केन्द्रीय चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूची में किन्नरों का नाम डालने और मतदाता पहचान पत्र बनाने की प्रक्रिया को उदार बनाया गया।

- केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा सरकारी अस्पतालों में किन्नरों के जेंडर रिअसाइनमेंट सर्जरी के सन्दर्भ में एक अधिसूचना जारी की गयी।

- केन्द्रीय समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा एक अधिसूचना के तहत चेला किन्नर, 'लेती' परंपरा के नाम पर शोषण कर रहे गुरु के खिलाफ शिकायत दर्ज कर कार्रवाई की मांग कर सकता है।

- 5 दिसंबर, 2016 को पार्लियामेन्ट्री स्टैंडिंग कमेटी के समक्ष डॉ. सक्सेना ने अपने एक घंटे के प्रेजेन्टेशन में कमेटी के अध्यक्ष श्री रमेश बैस व अन्य माननीय सदस्यों को किन्नरों की दुर्दशा से परिचित कराया।

डॉ. सक्सेना एक प्रशिक्षित रेकी मास्टर हैं। वे हिप्नोसिस के जरिए पास्ट लाइफ रिग्रेशन (PLR) विधा के जानकार हैं। अब तक 700 से अधिक PLR सेशन्स कर चुके हैं।

डॉ. सक्सेना PLR का प्रयोग लोगों के क्रोनिक हेल्थ प्रॉब्लम्स, फोबिया, रिलेशनशिप इश्यूज वगैरह के समाधान के लिए करते हैं। ऐसे लोगों की फेहरिस्त काफी लंबी है जो गाहे-बगाहे अपनी, अपने परिवार और यार-दोस्तों की समस्याओं के समाधान के लिए डॉ. सक्सेना से सम्पर्क करते रहते हैं।

'क्लींजिंग थेरेपी- क्योर योरसेल्फ' का यह हिन्दी अनूदित संस्करण डॉ. सक्सेना की चौथी प्रकाशित पुस्तक है।

हाल में ही उनकी एक और बहुप्रतीक्षित पुस्तक रिलीज हुई है जिसका नाम है 'मिस्ट्रीज़ ऑफ लाइफ' यानी कि जीवन के रहस्य। इस पुस्तक में उन्होंने सरल भाषा में जीवन-मृत्यु और आत्मा संबंधी कई विषयों पर चर्चा की है। इसमें उन्होंने संक्षिप्त में बताया है कि किस तरह कुछ खास विधियों से मरीज के डर, रिलेशनशिप इश्यूज, क्रोनिक डिजीज आदि का इलाज कर सकते हैं बिना किसी दवा के। इस पुस्तक को आप निम्न लिंक पर क्लिक करके पढ़ सकते हैं-

https://www.drpiyushsaxena.com/assets/pdf/Book_Mysteries_of_Life_EN.pdf

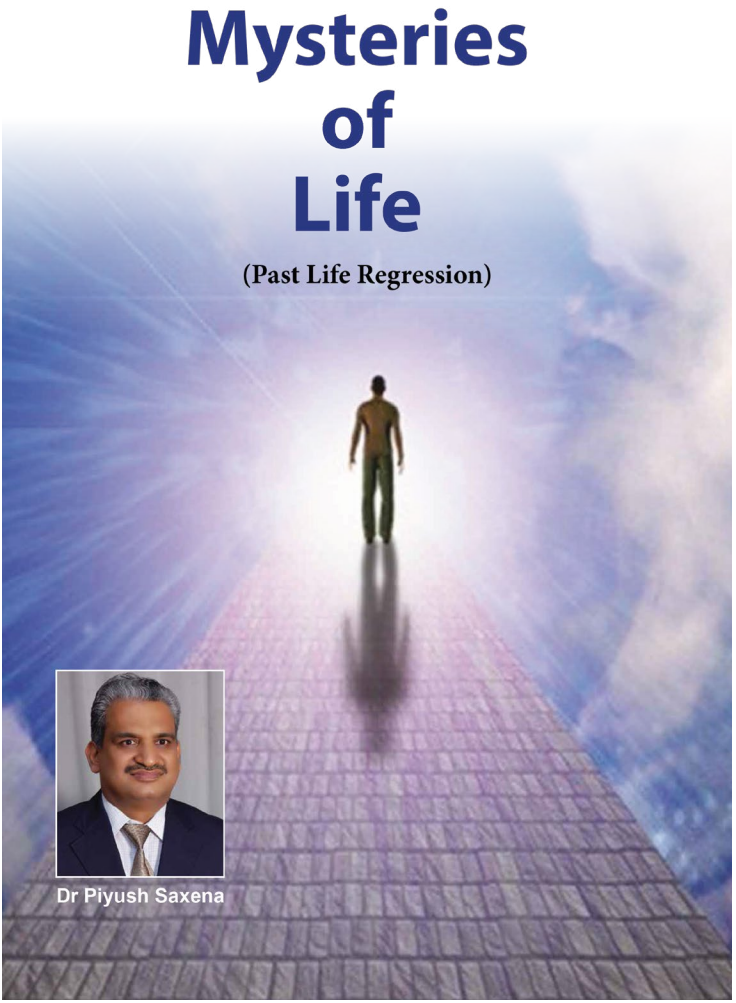

एक हुनर यह भी : मनोज तिवारी और अरुणा ईरानी के साथ एक फिल्म में

कला के क्षेत्र में भी डॉ. सक्सेना की गहरी रुचि है। वे एक प्रगतिशील विचारधारा वाले फिल्म निर्देशक हैं तथा कई टी.वी. सीरियल्स, फिल्मों और ड्रामा में एक्टिंग कर चुके हैं। वे रामलीला में भी काम करते रहे हैं और कवि-सम्मेलनों की भी शोभा बढ़ा चुके हैं।

उन्हें बच्चों का साथ बेहद पसंद है। वे उनके (और बड़े-बुजुर्गों के भी) मनोरंजन के लिए बर्थडे पार्टीज, स्कूल-कॉलेज आदि में मैजिक शो करते रहते हैं। इससे बच्चों और बड़े-बुजुर्गों को अपनी रुटीन लाइफ से बाहर निकलकर एक नयी

मुंबई की एक रामलीला में परशुराम की भूमिका में

एक कवि सम्मेलन में कविता पाठ करते हुए

खुशी का एहसास होता है। डॉ. सक्सेना अपनी उपर्युक्त सभी गतिविधियों के लिए कोई फीस नहीं लेते। डॉ. सक्सेना 'स्वांतः सुखाय, बहुजन हिताय' की परंपरा को आज भी जिंदा रखे हुए हैं।

डॉ. सक्सेना को पीने का नहीं (वे शराब, चाय-कॉफी नहीं पीते), लेकिन खाने का खूब शौक है। वे मांसाहारी हैं। कुकिंग का शौक रखते हैं, खासकर नॉर्थ इंडियन व्यंजन।

मॉडर्न स्कूल, लखनऊ में मैजिक शो करते हुए

'सैर कर दुनिया की, गाफिल जिन्दगानी फिर कहां' उनके जीवन का मंत्र है। वे दुनिया भर की सैर कर चुके हैं; सभी महाद्वीपों में जा चुके हैं।

पूर्व राष्ट्रपति महामहिम (स्व.) डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम के स्नेहपूर्ण सान्निध्य में

डॉ. सक्सेना अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस, जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड, इटली, जापान, इजिप्ट, ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम, ब्राजील, अर्जेन्टिना, चिली, उरुग्वे, फाकलैंड आइलैंड्स, नीदरलैंड, हांगकांग, सिंगापुर, थाइलैंड, मलेशिया, दुबई, चाइना, साउथ अफ्रीका, बोत्सवाना, केन्या, तंजानिया, नॉर्थ कोरिया, श्रीलंका, नेपाल, पाकिस्तान, अन्टार्कटिका आदि देशों की सैर कर चुके हैं।

एक क्रिसमस पार्टी में सांताक्लॉज बनकर बच्चों का दिल बहलाते हुए

सेहत हजार नियामत! डॉ. सक्सेना अपनी अच्छी सेहत का श्रेय क्लींजिंग थेरेपी और अपनी सक्रियता को देते हैं। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के अमरनाथ झा छात्रावास में, वे 1977 में शतरंज और 1978 में ब्रिज (ताश का एक खेल) के विजेता रह चुके हैं। रिलायंस इंडस्ट्रीज की 'इंटरनल स्क्वैश प्रतियोगिता', 2012 की ओपन कॅटगरी में वे उपविजेता रह चुके हैं।

रोज सुबह के रुटीन स्क्वैश सेशन के दैरान

वे स्किइंग, स्काई डाइविंग, स्क्यूबा डाइविंग, पैराग्लाइडिंग, व्हाइट वाटर रॉफ्टिंग, ट्रैकिंग और हाइकिंग सरीखे एडवेंचर स्पोर्ट्स में भी भाग लेते रहे हैं।

नोटः डॉ. सक्सेना के लेख, पुस्तकों, वीडियोज आदि को उनकी वेबसाइट्स www.thetempleofhealing.org और www.drpiyushsaxena.com से फ्री डाउनलोड किया जा सकता है।

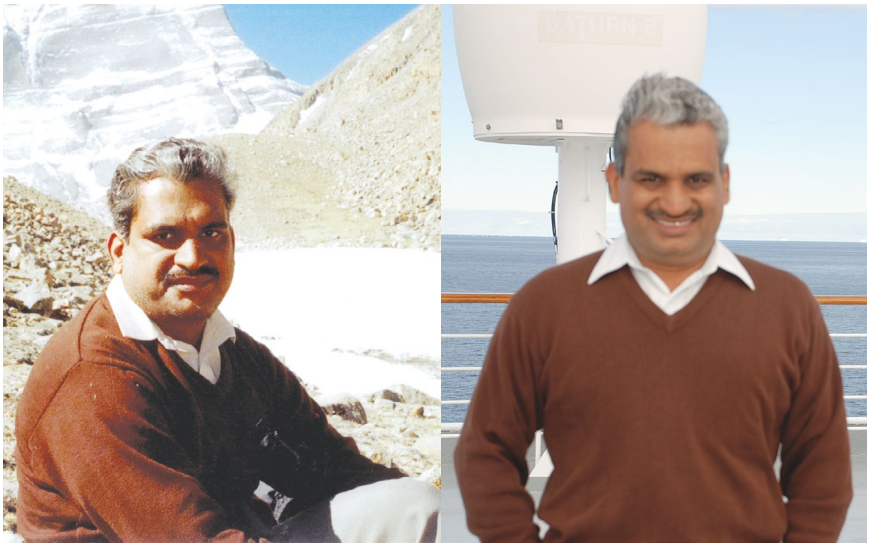

सुकून के कुछ क्षण
कैलास पर्वत के दिव्य वातावरण में और अंटार्कटिका में

बोत्सवाना में एक चीते से खेलते हुए

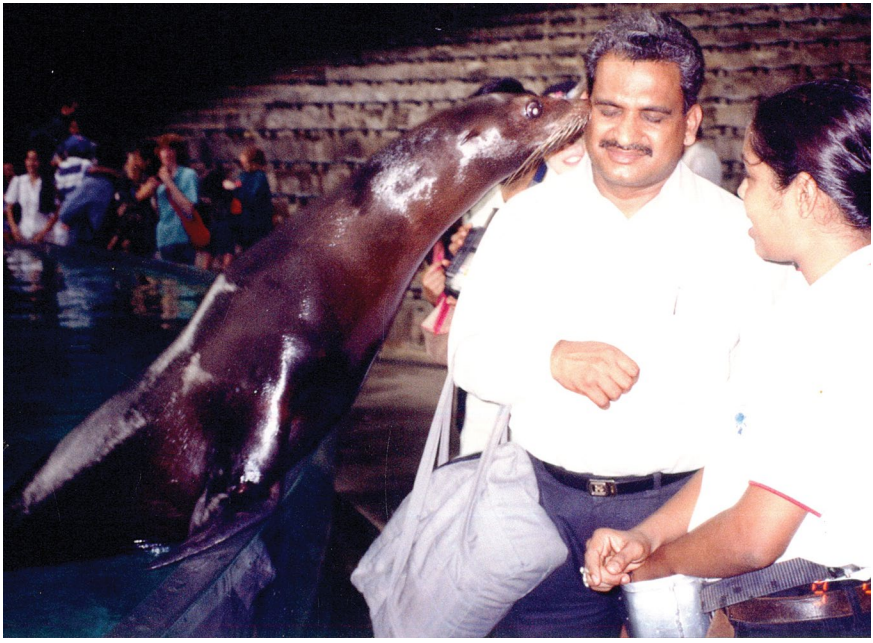

वेलकम सर! सील के साथ अठखेली करते डॉ. सक्सेना ऑस्ट्रेलिया में

टोक्यो, जापान में जापानी बच्चों के साथ इंडियन धुन पर डांस करते हुए

ऊंची उड़ान! सैन फ्रांसिस्को, यूएसए में स्काई डाइविंग के दौरान

मॉस्को के युरी गगारिन कॉस्मोनट ट्रेनिंग सेन्टर में

पियोंगयांग, नॉर्थ कोरिया स्थित कुम्सुसन पैलेस ऑफ द सन के बाहर डॉ. सक्सेना और साथी